मधुबन ओम् शान्ति अंक 323 जून 2019

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(13-05-19)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा कर्मयोगी, राजयोगी, सहजयोगी, विश्व कल्याण की बेहद सेवा के निमित्त बनी हुई टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सब बाबा की राइटहैण्ड भुजायें, दिन-रात अथक बन बाबा को प्रत्यक्ष करने की बेहद सेवाओं में तत्पर हैं। मैं भी मधुबन की वार्षिक मीटिंग के बाद दुबई, नैरोबी आदि में बाबा के बच्चों से मिलन मनाते, अभी लण्डन में हूँ। यहाँ भी बाबा के बच्चे याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा सदा उड़ती कला में उड़ते रहते हैं। बाबा डबल विदेशी बच्चों की भी दिल से महिमा करते, कैसे दूरदेश में रहते भी दिलाराम बाप के प्यार में समाये रहते हैं। मैं तो देख रही हूँ - सभी के अन्दर यही उमंग-उत्साह है कि हम कोई ऐसी सेवा करें जो विदेश का आवाज भारत में गूंजने लगे।

आज के संसार में तो हर मनुष्य को शान्त रहने की शक्ति चाहिए, इसके निमित्त बाबा ने हम बच्चों को बनाया है इसलिए हम सबके पास शान्ति की शक्ति ऐसी जमा हो जो पूरे विश्व में शान्ति के वायब्रेशन्स फैला सकें। लोग तो इसकी प्राप्ति के लिए कितने प्रकार के हठयोग, प्राणायाम आदि करते हैं लेकिन उससे कोई अविनाशी वा स्थाई शान्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती। हम सब कहाँ भी रहते, कोई भी कार्य करते सदा इसी स्मृति में रहते हैं कि मैं कौन, मेरा कौन ... यही हमारे चेहरे से, चिन्तन से, स्मृति, दृष्टि, वृत्ति से अनुभव होता रहे क्योंकि वर्तमान समय सदा सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द में रहना... यही हमारा स्वधर्म है। हम कर्मयोगी, राजयोगी, सहजयोगी, स्नेही योगी, सच्चे योगी हैं। जहाँ हमारा बाबा है वहाँ हम बच्चे हैं। बाबा के संग का रंग हम सबको लग गया है। बोलो, लगा है ना! संगमयुग का यह जो थोड़ा सा टाइम है, ऐसा टाइम सारे कल्प में फिर नहीं आयेगा। तो सदा खुशी में मिलकरके नाचो गाओ...संगमयुग की मौज मनाओ क्योंकि इस समय भगवान हमारा मीत है, हम उसके ही गीत गाते हैं। सिर्फ गीत में दिल की सच्चाई और बुद्धि की सफाई हो। बाबा के सभी प्यारे और न्यारे बच्चों का पार्ट वन्डरफुल है। निश्चय बुद्धि से सदा निश्चिंत रहना, नशे में रहना सहज स्वभाव हो जाए। बाबा के सब बच्चे बहुत अच्छे, मीठे हैं। हुकुमशाही (आर्डर) नहीं चलाते हैं। बाबा कहते हैं बच्चे ज्यादा कुछ नहीं करो, सिर्फ मुस्कराना सीख लो। चेहरा कभी सीरियस न हो। ड्रामा में जो भी सीन सामने आती है, उसे देखते सदा राज़ी रहो, खुश रहो। चारों सबजेक्ट पर पूरा अटेन्शन दो। कोई भी बात का टेन्शन न लो। कुछ भी हो जाये पुरुषार्थ में भी ढीलापन न आये। सच्चा पुरुषार्थ, तीव्र पुरुषार्थ ऐसा हो जो बाबा और हमारे में कोई अन्तर दिखाई न दे। जो हमको देखे वो कहे बाबा ऐसा है! मुश्किलातों में भी सदा मुस्कराते रहो। तो जितना अच्छी रीति पढ़ाई पढ़ेंगे और सच्ची दिल से पुरुषार्थ करेंगे उतना सफलता मिलती रहेगी। अभी के पुरुषार्थ से मैं तो बहुत खुशनसीब हूँ, खुशी मेरे नसीब में है। ऐसे नहीं मैं किसी से भेंट करती रहूँ... इनको खुशी है, मुझे नहीं है। खुशी तो मुझे बाबा से लेनी है। बाबा हमारे लिए ही आया है, तब तो देखो इस कल्पवृक्ष के फाउण्डेशन में बिठाया है। हरेक न्यारा है, दो समान नहीं हैं। इनका अच्छा पार्ट है, मेरा नहीं है, ऐसा विचार भी नहीं आना चाहिए। बाबा कहते बच्चे, तुम सिर्फ शान्त रहो और धीरज धरो, तो समझ में आयेगा कि सब ठीक है, सब अच्छा है। ऐसे अच्छा-अच्छा सोचने वाले, अच्छा बोलने वाले स्वत: योगी, सहजयोगी बन जाते हैं। अच्छा! अभी जून मास से तो शान्तिवन में योग तपस्या के कार्यक्रम हैं, उस समय सभी से सम्मुख मिलना होगा ही। अच्छा - सबको बहुत-बहुत याद......

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"प्रकृतिजीत बनने के लिए कर्मेन्द्रिय जीत बनो"

1) आप बच्चे मायाजीत तो बन ही रहे हो लेकिन प्रकृतिजीत भी बनो क्योंकि अभी प्रकृति की हलचल बहुत होनी है। कभी समुद्र का जल अपना प्रभाव दिखायेगा तो कभी धरनी अपना प्रभाव दिखायेगी। अगर प्रकृतिजीत होंगे तो प्रकृति की कोई भी हलचल आपको हिला नहीं सकेगी। सदा साक्षी होकर सब खेल देखते रहेंगे। जितना आप अपने फरिश्ते स्वरूप में अर्थात ऊंची स्टेज पर होंगे, उतना हलचल से स्वत: परे रहेंगे।

2) प्रकृतिजीत बनने के पहले कर्मेन्द्रिय जीत बनो तब फिर प्रकृतिजीत सो कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व राज्य अधिकारी बन सकेंगे। तो अपने से पूछो - हर कर्मेन्द्रिय ''जी हजूर'' ''जी हाज़िर'' करती हुई चलती है? आपके मंत्री, उपमंत्री कहाँ धोखा तो नहीं देते हैं?

3) आप बच्चों के पास पवित्रता की बहुत महान शक्ति है जो अपनी पवित्र मंसा अर्थात् शुद्ध वृत्ति द्वारा प्रकृति को भी परिवर्तन कर सकते हो। मन्सा पवित्रता की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है - प्रकृति का भी परिवर्तन। तो स्व परिवर्तन से प्रकृति और व्यक्ति का परिवर्तन कर सकते हो।

4) तमोगुणी मनुष्य आत्माओं और तमोगुणी प्रकृति के वायुमण्डल, वायब्रेशन से बचने का सहज साधन यह ईश्वरीय मर्यादायें हैं। मर्यादाओं के अन्दर रहो तो मेहनत से बचे रहेंगे। मेहनत तब करनी पड़ती है जब मर्यादाओं की लकीर से संकल्प, बोल वा कर्म से बाहर निकल आते हैं।

5) आप सदा अपने पूर्वज-पन की पोजीशन पर रहकर संकल्प द्वारा आर्डर करो कि पांच विकार तुम आधाकल्प के लिए विदाई ले जाओ, प्रकृति सतोप्रधान सुखदाई बन सबको सुख पहुंचाओ। तो वह आपके आर्डर प्रमाण कार्य करेंगे। फिर यह प्रकृति धोखा दे नहीं सकती। परन्तु पहले स्वयं के अधिकारी बनो, स्वभाव-संस्कार के भी अधीन नहीं, जब अधिकारी होंगे तब सब आर्डर प्रमाण कार्य करेंगे।

6) जैसे साइन्स की शक्ति से प्रकृति अर्थात् तत्वों को आज भी अपने कन्ट्रोल में रख रहे हैं, तो क्या आप ईश्वरीय सन्तान मास्टर रचता, मास्टर सर्वशक्तिमान के आगे यह प्रकृति और परिस्थिति दासी नहीं बन सकती! जब साइन्स की अणु शक्ति महान कर्त्तव्य कर सकती है तो आत्मिक शक्ति, परमात्म-शक्ति क्या नहीं कर सकती है, सहज ही प्रकृति और परिस्थिति का रुप और गुण परिवर्तन कर सकती है।

7) सर्व विघ्नों से, सर्व प्रकार की परिस्थितियों से या तमोगुणी प्रकृति की आपदाओं से सेकण्ड में विजयी बनने के लिए सिर्फ एक बात निश्चय और नशे में रहे - कि ''वाह रे मैं'', मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ, इस स्मृति में रहो तो समर्थी स्वरूप बन जायेंगे।

8) यह ज्ञान धन सब धनों से श्रेष्ठ है। ज्ञान धन वालों की प्रकृति स्वत: ही दासी बन जाती है। प्रकृति द्वारा आई हुई परिस्थितियाँ रचना है, आप मास्टर रचयिता हो। मास्टर रचयिता अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान कभी हार खा नहीं सकते, असम्भव है। सिर्फ मास्टर रचता की सीट पर सेट रहो तो सीट के आधार पर शक्तियाँ स्वत: आयेंगी।

9) जब सोचते हो कि यह मेरा 'कर्मभोग है', 'कर्मबन्धन है','संस्कारों का बन्धन है', 'संगठन का बन्धन है' – तो व्यर्थ संकल्प रूपी जाल को स्वयं ही इमर्ज कर उसमें फँस जाते हो, फिर कहते हो कि अभी छुडाओ। बाप तो कहते हैं कि तुम हो ही छूटे हुए। छोड़ो तो छूटो। यह मेरा-पन छोड़ दो। यह मेरा-मेरा ही रॉयल माया है, इससे मायाजीत बन जाओ तो सेकेण्ड में प्रकृति जीत बन जायेंगे।

10) जब भी प्रकृति द्वारा कोई पेपर आता है तो यह क्यों, यह क्या ...इस हलचल में नहीं आओ। हलचल में आना अर्थात् फेल होना। कुछ भी हो, लेकिन अन्दर से सदा यह आवाज़ निकले वाह मीठा ड्रामा। 'हाय क्या हुआ' यह संकल्प में भी न आये, ड्रामा के ज्ञान से स्वयं को ऐसा मज़बूत बनाओ।

11) आप पुण्य आत्माओं को डायरेक्ट बाप द्वारा प्रकृति-जीत, मायाजीत की विशेष सत्ता मिली हुई है, आप ऑलमाइटी सत्ता वाले, अपने ऑलमाइटी सत्ता के आधार पर अर्थात् पुण्य की पूंजी के आधार पर, शुद्ध संकल्प के आधार पर, व्यक्ति वा प्रकृति का सहज परिवर्तन कर सकते हो।

12) मायाजीत व प्रकृति जीत बनने के लिए समेटने की शक्ति को धारण करो, इसके लिए देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। अभ्यास करो - अभी-अभी साकारी, अभी-अभी आकारी और अभी-अभी निराकारी, प्रकृति की हलचल देख प्रकृतिपति बन, अपने फुल स्टाप की स्टेज से प्रकृति की हलचल को स्टाप करो। तमोगुणी से सतोगुणी स्टेज में परिवर्तन करो -

यह अभ्यास बढ़ाओ।

13) अपने स्वदर्शन चक्रधारी के टाइटल प्रमाण सदा स्व-दर्शन चलता रहे। स्व आत्मा है, देह पर है, प्रकृति है। प्रकृति भाव में आना भी प्रकृति के वशीभूत होना है। यह भी परदर्शन है। व्यर्थ संकल्प वा पुराने संस्कार यह भी देहभान के सम्बन्ध से हैं। आत्मिक स्वरूप के संस्कार जो बाप के संस्कार वह आत्मा के संस्कार हैं। तो ऐसे संस्कारों को धारण करो तब मायाजीत और प्रकृतिजीत बनेंगे।

14) संगम पर ही प्रकृति सहयोगी बनने का अपना पार्ट आरम्भ कर देगी। सब तरफ से प्रकृतिपति का और मास्टर प्रकृतिपति का आह्वान करेगी। सब तरफ से आफरीन और ऑफर होगी। इसलिए प्रकृति के हर तत्व को देवता के रूप में दिखाया है। देवता अर्थात् देने वाला। तो अन्त में यह सब प्रकृति के तत्व आप सबको सहयोग देने वाले दाता बन जायेंगे।

15) चारों ओर कितनी भी किसी तत्व द्वारा हलचल हो लेकिन जहाँ आप प्रकृति के मालिक होंगे वहाँ प्रकृति दासी बन सेवा करेगी। सिर्फ आप प्रकृतिजीत बन जाओ। फिर यह प्रकृति अपने मालिकों को सहयोग की माला पहनायेगी। जहाँ आप प्रकृतिजीत ब्राह्मणों का पाँव होगा, स्थान होगा वहाँ कोई भी नुकसान हो नहीं सकता। फिर सब आपके तरफ स्थूल-सूक्ष्म सहारा लेने के लिए भागेंगे। आपका स्थान एसलम बन जायेगा। और सबके मुख से,''अहो प्रभू, आपकी लीला अपरमपार है'' यह बोल निकलेंगे। ''धन्य हो, धन्य हो, आप लोगों ने पाया, हमने नहीं जाना, गंवाया।'' यह आवाज़ चारों ओर से आयेगा।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 23-01-15 *मधुबन*

“कोर्स के साथ-साथ अपनी स्थिति ऐसी बनाओ जो सबमें फोर्स भर दो”

तीन बारी ओम् शान्ति, मैं कौन? मेरा कौन? और मुझे क्या करने का है? हर एक आत्मा को स्मृति आई है, मुझे स्मृति में रहना है। जैसी वृत्ति और स्मृति, ऐसी है दृष्टि। पहले वृत्ति या पहले स्मृति? दृष्टि तो पीछे है ना। वो दो आँखें हैं, यह तीसरा नेत्र है। त्रिनेत्री हैं, त्रिकालदर्शी हैं, तीनों लोकों के मालिक हैं जिसको यह भान आता है और जो इस नशे में रहते हैं वो हाथ उठाओ। पक्का है ना!

सीढ़ी कहती है टाइम पूरा हो गया, अभी ऊपर जाओ। त्रिमूर्ति, झाड़, गोला, सीढ़ी यह मुख्य चित्र सब जगह लगे हों तो जो भी यहाँ पाँव रखेगा उसे अच्छा लगेगा। सारे ज्ञान का सार बुद्धि में है, त्रिमूर्ति में पहले ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी बाप शिव है। पर काम ब्रह्मा करता है विष्णु बनने के लिए, नर से नारायण बनने के लिए।

मैंने सात दिन का कोर्स नहीं किया है परन्तु बाबा कहता था बच्ची अच्छी है कोर्स कराने में, किया नहीं है किसी ने नहीं कराया, बाकी दीदी हमारी फ्रैंड रही है। दीदी, दीदी थी। दीदी, क्वीन मदर और शील मुझे पता था यह माँ बेटियां हैं परन्तु क्वीन मदर कभी नहीं दिखाती थी, मैं कोई माँ हूँ। वो कहती थी मैं शरीर छोड़ूं ना कोई सम्बन्धी मेरे सामने न हों, यह उसका संकल्प पूरा हुआ, वन्डरफुल। अभी मैं कहती हूँ कोर्स न करो न कराओ, हर्जा नहीं है परन्तु बुद्धि से जहाँ भी जाओ वहाँ स्थिति ऐसी हो जैसे फोर्स का काम करे। जैसे अभी मैं यहाँ आई हूँ, ड्रामा। माँ है मेरी ड्रा मा, बाबा मेरा है, यह दिल से निकलता है। मैं जब बोलती हूँ तो क्या भासना आती है? भावना अच्छी है तो भासना ऐसी आती है, जो भावना भासना देती है। हर एक अपने से पूछे सर्व सम्बन्ध बाबा के साथ हैं? माता, पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरु कैसे हैं, भासना आती है ना। सभी को बाबा का बनने से बहुत सुख मिलता है। इस पर गीत बना हुआ है, बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है...।

अभी मेरी आँखों की नज़र भी थोड़ी कम हो गई है, कान तो बाकी भी कहते हैं कुछ न सुनो। पर सुनाती जरुर हूँ। मुख चल रहा है, मुख से वाणी चलाती हूँ, मुख एक होता है। आँखें दो होती है, कान दो हैं एक बाबा की बातें कान से सुनो, दूसरी बातें कान से निकाल दो। जो नाराज़ होके मन से वा मुख से गाली देते हैं वो ऐसे करते हैं, वो बाबा का बच्चा नहीं है, बाबा कहते ऐसों को भी गले लगाओ। इसके लिए कभी भी किसी को देख मुँह ऐसे नहीं करना है। मैं कौन, मेरा कौन? तो मैं हूँ आत्मा, मन-बुद्धि-संस्कार, यह बहुत अच्छा नम्बर बना हुआ है। आत्मा में क्या है? मन, बुद्धि, संस्कार। पहले मन से मनमनाभव फिर बुद्धि से मध्याजीभव माना चतुर्भुज रूप का ध्यान रखो। गीता में भी है मेरे चतुर्भुज रूप का ध्यान करो।

ब्रह्मा भी विष्णु का ध्यान रखता है तभी तो नारायण बना। नर नारायण, नारी लक्ष्मी। तो मैं नारी हूँ या नर हूँ? मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा है परमात्मा।

सदा इसी स्मृति में रहना कि एक बाबा दूसरा न कोई। अभी मैं समझती हूँ कोई भी बहन भाई नहीं है जो खुश न हो। खुशी कोई पैसे से मिलने वाली नहीं है। इसके लिए न कभी किसी के नाम रूप में फंसी हूँ, न कोई मेरे नाम रूप में फंसा है। कोई किसी में न फंसे न फंसाये। सब अच्छे हैं। खुश है। सब ऐसे खुश हैं! अच्छा।

दादी जानकी जी दूसरा क्लास

"अभी हम सबकी स्थिति फुल मून (सम्पूर्ण चन्द्रमा) जैसी होनी चाहिए, मुखड़ा देख ले प्राणी"

मैं जब 3 बारी ओम् शान्ति कहलाती हूँ तो रेसपांड अच्छा मिलता है। मैं ही ओम् शान्ति से शुरू नहीं करेंगी तो आप फॉलो कैसे करेंगे इसलिए दिल की भावनाओं को कैच करके उनसे जो फायदा मिला है, वही सबको सुनाना चाहती हूँ। तो यह भावना है इसलिए अभी पहले बोलो ओम् शान्ति, ओम् शान्ति, ओम् शान्ति।

जैसे मेरे को भारतवासी समझकर सब नमस्ते करते हैं, मैं भी ऐसे हाथ हिलाती हूँ। तो यह फर्क पड़ता है, क्योंकि कर्म वही है, पढ़ाई वही है। माँ बाप टीचर गुरू वही है ना। वन्डर तो यह है जो वो कभी चेन्ज होते ही नहीं हैं ना। कितने कल्प बीत गये पर शिवबाबा कोई और हो, ब्रह्माबाबा कोई और हो, ऐसे तो नहीं है ना। मैं भी तो वही हूँ, तुम भी वही हो। तो यह स्मृति आपस में अच्छा मिलन मनाना सिखाती है। फिर फायदा हुआ स्मृति से, फालतू बातें सोचने वाले को चैन नहीं मिलता है।

अपनी दिल सच्ची है तो मुराद हांसिल है। सच्ची दिल से जो करते हैं ना, ऑटोमेटिकली उनकी मुराद पूरी होती है। भगवान जैसा सच्चा कोई नहीं है। जो भगवान सुनाता है वो सच सुनाता है। हम बच्चे भी भगवान से सच सीखते हैं, तो उसी से जिंदा हैं। मैं तो शरीर छोड़ने वाली थी, तो बाबा ने मधुबन में बोला कि जनक को प्रकृति साथ देगी। बाबा ने यह 1991 जनवरी को कहा था। यह इतना अच्छा अनुभव हुआ, प्रकृति साथ देगी।

रजनी बहन का बाबा से और बाबा की मुरली से बहुत प्यार था, तो बाबा भी कहता था इसे रोज़ मुरली जानी चाहिए। तो बाबा के अक्षर थोड़ा उसे इतना समझ में नहीं आते थे, तो शान्तामणी दादी बहुत अच्छे नोट्स लेती थी, तो वो नोट्स लेके मैं रोज़ पत्र के रूप में उनको भेजती थी। यह सेवा शुरू शुरू में बाबा ने हमें दी थी। विदेश सेवा का बीज इन जैसी आत्माओं से पड़ा। जो कराने के निमित्त है ना, उसका भाग्य बनता जाता है। अभी ऐसा पुरुषार्थ करो, जो हरेक एक दो को इसमें भले ओवरटेक करे।

आपके पास कोई भी आता है तो मेहमाननिवाजी करना चाहिए। भोजन से भी हरेक को ऐसी भासना आवे, किसकी शक्ल देखके यह नहीं कहें कि यह भी खाना खायेगी क्या! अरे, भले खाये ना! ब्रह्माभोजन मुख में जाये तभी ब्रह्मा मुख से जो भोजन मिलता है वो हज़म कर सके। खाने के बिगर काम कैसे करेंगे। सिर्फ प्यार से खाओ और खिलाओ। प्यार में कोई खर्चा नहीं है। कोई कोई भाई बहनें ऐसे हैं, जो ज्ञान सुनकर ज्ञान में नहीं आये हैं, खाने से आये हैं। खिलाने में और खाने में खुश रहो, इतना थोड़ा भी खिलाओ तो सुख मिलता है।

जिसके अन्दर गुस्सा है उसका न तन दुरुस्त है, न मन दुरुस्त है, न सेवा अच्छी होगी, न तन से न मन से। धन से करेगा परन्तु भावना से नहीं करेगा तो सफल नहीं होगा। तो बहुत गुह्य ज्ञान है। यह गुह्य ज्ञान हमारे पास नहीं होगा तो क्या सेवा करेंगे!

मम्मा को ध्यानी दादी ने गोद की बच्ची बनाया था। मम्मा की वह मौसी लगती थी। हमारा भी ध्यानी दादी से बहुत प्यार था। पहले उसका नाम लक्ष्मी था, पर योग बहुत अच्छा करती थी इसलिए बाबा ने ध्यानी नाम रख दिया।

हम दीदी दादी के साथ बहुत चिटचैट करते थे कि आज की मुरली में यह बात शिवबाबा ने कही वा ब्रह्माबाबा ने कही! कौन-सी बात किस भाव वा किस दृष्टि से कही! वो रूहानी सच्चाई का जो प्रेम है ना, उसमें कशिश बहुत होती थी।

उसका बाबा के पास से उठने का जी नहीं करेगा। जब मैं बाबा के सामने बैठती थी तो मेरा भी यही हाल होता था। रिवाजी ब्राह्मण भी कथा सुनाता है तो उसके सामने सुनने वालों की बैठक कैसी होती है - वो दिन भर खाना खायेंगे, व्रत रखेंगे, फुल मून को (चन्द्रमा को) देखकर खाना खायेंगे। तो अभी हमारी स्थिति फुल मून जैसी होनी चाहिए, खायेंगे पियेंगे सब बाबा की यादों में।

एक बारी साकार बाबा से मैं बहुत अच्छी-अच्छी बातें कर रही थी, बाबा को भी अच्छी लग रही थी। बाबा को भासना आ रही थी कि बच्ची के साथ सत्यनारायण की कथा चल रही है, थोड़ा ठहरो, ऐसे बाबा ने कहा तो मुझे बहुत खुशी हुई। सचमुच लगा कि यह सत्य है जो नर नारायण बना है। अभी वो नर नारायण कैसे बना, वो सारी खुशी की बातें बुद्धि में हैं। नशे सभी में है नुकसान, बगैर नशे नारी लक्ष्मी नर नारायण बन जाए, वन्डरफुल है ना! लक्ष्मी-नारायण दोनों बनेंगे, लक्षण होंगे तो नारायण बनेंगे। नारायण जैसे लक्षण होंगे तो लक्ष्मी भी उसको स्वीकार करेगी। यह नारायण है, मैं कोई कम हूँ क्या! तो हरेक लक्ष्मी नारायण बनता है, जिन्हों को ऐसे लक्ष्मी नारायण बनना होगा, राजाई में आना होगा वही ऐसी बातें करेंगे और जिसको प्रजा में आना होगा वो ऐसी बातें नहीं करेंगे।

क्वीन मदर ने कहा था सतयुग में मैं कृष्ण को जन्म देने वाली नहीं बनेगी पर पालना मैं करूँगी। मेरे को आया मैं भले कृष्ण की पालना नहीं करूँ, पर कृष्ण का जन्म कैसे हुआ, मैं देखूँ आँखों से यह मुझे संकल्प है। आप भी ऐसे सोचते होंगे ना! सतयुग का सोचते हो या यहाँ बहुत काम है, बिजी रहते हैं। यह सब सोचने के लिए हमारे पास इतना टाइम नहीं है, माना व्यर्थ सोचने में टाइम है। भले 6 घण्टा काम करते हो 1 घण्टा याद करते हो, ठीक है परन्तु वास्तव में क्या है? कम से कम 6 घण्टा याद में बीते, ... मेरा तो यह हाल होता है। बाबा की मुरली आइना है, मुखड़ा देख ले प्राणी... मैंने कितने पुण्य कर्म किये और कौन-से पुण्य किये? देह-अभिमान वश या लगाव वश या किसी ने मेरी ग्लानि की उसके कारण कौन-सी भूल की है? क्योंकि देह अभिमान वश किसी की ग्लानि करना वा ग्लानि सुनके नाराज़ होना, अपनी ग्लानि करना है। किया दूसरे ने हम उसकी ग्लानि करें, बाबा कहता है जो तेरी ग्लानि करे उसको गले का हार बनाओ। मैं किसी की ग्लानि नहीं करती हूँ, पर कहती हूँ ऊंच पद पाने का ख्याल रखो। दिल कहता है कम पद कोई नहीं पावे, संगम पर अन्तिम जन्म है।

साकार बाबा ने जो किया कराया, वो आइना है हमारे पास, उसी को फॉलो करते चलो तो यह शक्ल दिखाने लायक बनेंगे। ऐसे बाबा को ही मात-पिता, टीचर, गुरू फिर सखा समझो तो खुशी की खुराक खाते रहेंगे, कोई भी बात की चिंता नहीं रहेगी। मुझे तो संकल्प तक भी बात नहीं आयेगी लेकिन वह बात प्रैक्टिकल हो जायेगी, ऐसे बहुत मिसाल हैं। मुझे यह संकल्प आवे ना यह काम होवे, नहीं होगा। पर बात अच्छी है तो वो मिस नहीं होगी, यह है सच्चाई, इमानदारी, वफादारी की कृपा। जितना बाबा से सच्चाई और प्रेम से चलेंगे ना उतना अच्छा है। नम्रता, धैर्यता से चलते रहो, कोई राय देगा तो अच्छा है, मैं करुंगा। कैसे करूँगा यह नहीं सोचना, यह शोभता नहीं है। तुम यह करो अच्छा होगा। मेरा यह काम नहीं है, फलाने का काम है, तो यह जैसे तिरस्कार किया। ऐसा ऊंचा काम जो कर रहे हैं, इनसे ऊंचा नहीं कर सकते। कई ऐसे टाइम वेस्ट करते हैं। जैसे मेरा एम है यह बुक लिखूँ, औरों ने भी मेरे में उम्मीदें रखी है इसलिए यह सेवा कर रही हूँ.. कई बार यह सोच भी भूत समान छोड़ता नहीं है।

जीवन में तीन बातें जरूर चाहिए – सच्चाई सफाई और सादगी। मैं सारी लाइफ ऐसे चली हूँ। एक बारी मधुबन में बाबा के पास गई थी, ठण्डी पड़ रही थी तो बाबा ने कहा जनक ठण्डी पड़ रही है, बाबा ने लच्छू को कहा जालन्धर से जो गर्म गंजी आई है ना वो इसको पहनाओ। लच्छू लेके आई तो मैंने वो गर्म गंजी पहनी, 2-3 साल वही पहनी फिर जब लण्डन आई, तो फटी हुई थी तो भी लेके आई। फिर यहाँ दही जमती नहीं थी तो मैं वो बाबा की दी हुई गर्म गंजी से कटोरी को ढकके रखती थी, तो दही अच्छी जम जाती थी। बाबा की चीज़ है ना, पहनी तो भी बहुत सेफ्टी, बाबा की गंजी पहनी हूँ। ऐसे ही जो भी बाबा के यज्ञ से मिलता है, यज्ञ के लिए अति प्यार हो। बाबा के लिए रिगार्ड हो और परिवार के लिए प्रेम हो। किसी के साथ न प्रेम हो तो ईश्वरीय आकर्षण का उनसे प्रभाव नहीं मिलेगा। लगेगा इसको ईश्वर खींचके चला रहा है, यह इंसान हो करके नहीं चल रहा है, यह तो एंजिल बनके चल रहा है।

विदेश और देश में इतना समय सेवायें की परन्तु कोई भी स्थान को मैंने अपना नहीं समझा है। उन दिनों में एक आणे की तरकारी (सब्जी) लेके एकॉनामी की है। हमारी बहनों की चप्पल टूटती थी तो जाकर कोने में बैठके उसे सिलाई करके कमरे में पहुँचाती थी। कभी चप्पल बाजार से खरीद नहीं करते थे। ऐसे एकॉनामी से चले हैं। कोई भी पिछले संस्कार इमर्ज न हों, यह ध्यान रखा है। जितना ध्यान रखते हैं उतना पुराने संस्कारों में परिवर्तन आता है। अच्छा।

"हिम्मत और शक्तियों के आधार पर विघ्नों को समाप्त कर, तूफान को तोहफा अनुभव करो"

गुल्ज़ार दादी जी का क्लास

सभी के दिल में बापदादा तो समाया हुआ है ही। लोग कहते हैं सबके अन्दर परमात्मा समाया हुआ है लेकिन हम कहते हैं कि हम सबके दिल में बापदादा की याद समाई हुई है। हम बच्चे हैं वो हमारा बाबा है। तो ब्रह्मा बाबा की बहुत मीठी-मीठी बातें सभी सुन रहे हैं। आप सब ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी तो बन गये, लेकिन ब्रह्मा बाबा को देखा है? तो क्या जवाब देंगे? अगर आप कहें कि हाँ हमने देखा है, तो हम पूछेंगे कि कहाँ और कैसे देखा है? तो आप जवाब दे सकते हो कि हाँ, हमने अनुभव की ऑख से ब्रह्माबाबा और शिवबाबा को देखा है और अनुभव की अथॉरिटी ही सबसे बड़ी मानी जाती है। ऑखों से देखी हुई चीज़ में फिर भी थोड़ा कुछ ऊपर नीचे अथवा मिसअण्डरस्टैण्डिग हो सकती है। लेकिन अनुभव की हुई चीज़ कभी कितना भी कोई बदलना चाहे तो भी नहीं बदल सकते। जैसे मानों चीनी को आपने चखकर देख लिया, तो वो मीठी होती है और अगर आपको सारे वर्ल्ड की आत्मायें भी कहें कि नहीं, चीनी मीठी नहीं होती है, खट्टी होती है तो आप मानेंगे? नहीं। क्योंकि चीनी को सिर्फ देखा ही नहीं बल्कि चखके उसके स्वीटनेस का अनुभव किया है।

तो हम सभी ने जो अव्यक्त बाबा से जन्म लिया है, उन सबने भी अनुभव के आधार से तो बाबा को देखा जाना है ना! इसीलिए हमारा दिल कहता है ''मेरा बाबा'' क्योंकि अनुभव करके आप सबने देखा है कि बाबा मेरा है और बाबा ने भी हम सबको कह दिया है मेरे बच्चे और मेरा मेरा कहते ही हमारे इस नये जन्म का सौदा भगवान से हो गया क्योंकि मेरा माना उस पर पूरा अधिकार होता है। तो सिर्फ कहने की रीति से नहीं, दिल से अगर कहते हैं मेरा बाबा तो हम अधिकारी बन ही गये। जो बाबा का वो मेरा और जो मेरा वो बाबा का। ऐसे नहीं बाबा का सो मेरा है लेकिन मेरा बाबा का नहीं, तो उसको बाबा बच्चा नहीं मानते हैं। इसलिये जो मेरा सो बाबा का और बाबा का सो मेरा – इसको कहा जाता है सच्चा-सच्चा ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी। तो आप सबने भगवान से ऐसा सौदा किया है ना। दिल से कहा है ना मेरा बाबा।

तो हम ब्रह्माबाबा, शिवबाबा की क्या बातें सुनायें! सचमुच अगर भगवान को बाबा (बाप) कहा जाता है तो हमने तो प्रैक्टिकल जीवन में साकार रूप में ब्रह्माबाबा और ब्रह्माबाबा द्वारा शिवबाबा का अनुभव किया है। हमारा दिल तो यही कहता है कि सारे कल्प में ऐसा बाबा मिल नहीं सकता है। चाहे सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा लेकिन लक्ष्मी-नारायण का बच्चा वह अनुभव नहीं करेगा जो संगमयुग पर हम बाबा (भगवान) के बच्चों ने अनुभव किया है। कोई बाप बच्चे को रोज़ाना तीन पेज का पत्र लिखे, जिसमें रोज़ नमस्ते करे, यादप्यार भेजे... ऐसा बाबा (बाप) आपने कभी देखा, सुना? नहीं ना। तो ऐसा बाप सारे कल्प में अभी ही देखा और मिला है। ऐसे सबका अनुभव है ना! दूसरा ऐसा शिक्षक आपने कभी देखा जो परमधाम से रोज पढ़ाने आये, और ऐसी पढ़ाई पढ़ाये जिससे एक जन्म में 21 जन्म का पद प्राप्त करा लेवे। ऐसा शिक्षक सारे कल्प में हो ही नहीं सकता है। और ऐसा सतगुरू जो हमको रोज़ अलग-अलग वरदान दे, वो भी घर बैठे-बैठे.. तो है ना यह कमाल। ऐसा सतगुरु सारे कल्प में नहीं मिल सकता है। तो हम कहते हैं ऐसा बाबा जो हमें मिला है, वह विश्व का बाबा है, यह हमारे सभी भाई-बहिनों को पता पड़ जाए।

तो हम लोगों की बाबा ने बचपन से ऐसी प्रैक्टिकल में पालना की क्योंकि हम छोटेपन से 9 वर्ष के आयु से ही अपने को ब्रह्मा-बाबा, शिवबाबा की गोद में पलता हुआ देखा, अनुभव किया। और मैं तो फ़लक से कहती हूँ कि कितने भी बड़े पदमपद्मपति हो, राजा के बच्चे हों लेकिन उनका बच्चा भी ऐसा पल नहीं सकता जैसे हम छोटे बच्चों की बाबा ने पालना की। हमें याद है अमृतवेले आत्म-अभिमानी बनके अशरीरी स्थिति में बाबा को याद करने बैठते थे, उसके बाद हमारी ड्रिल होती थी। तो बाबा और मम्मा दोनों ही सवेरे-सवेरे आते थे और हम एक एक बच्चे को ऐसे बाँहों में लेके गुडमार्निंग करते थे। और जब भी बाबा एक एक बच्चे को देखते थे तो बाबा के मुख से दो वरदान सदा निकलते थे – कि मेरा एक एक बच्चा विश्व कल्याणकारी बनने वाला है। तो वो वरदान अभी हम देख रहे हैं कि कैसे बाबा ने हमें विश्व-कल्याणकारी बना दिया। प्रैक्टिकल में विश्व की आत्माओं को सन्देश बच्चों द्वारा दे रहा है। दूसरा वरदान बाबा देते थे कि मेरा एक एक बच्चा चैतन्य ठाकुर है। जैसे भक्ति में सोने चांदी की मूर्तियां देवी देवताओं की बनाकर रखते हैं, उन्हें ठाकुर जी कहते हैं, ऐसे प्रैक्टिकल में हमें अनुभव कराया। सचमुच बाबा की जो हमारे प्रति भावनायें थी, वैसा बना भी दिया। यह भागवत किसका यादगार है? हम ही गोप-गोपियों के कहानियों का यादगार है। उन्हों ने तो थोड़ा मिक्स कर दिया है लेकिन

हमको रीयल रूप में बाबा की पालना और बाबा की शिक्षा मिली है, सतगुरु रूप में वरदान भी मिले हैं। और जिन्होंने बाबा के स्नेह का दिल से अनुभव किया होगा, उनको बाबा को याद करना मुश्किल नहीं है। तो हम सबने बाबा को दिल में समाया है। केवल बाबा, बाबा कहा नहीं है लेकिन दिल में समाया है। तो दिल में जिन्होंने बाबा को समा दिया है, उनको याद करना मुश्किल नहीं है। तो आप सबका क्या अनुभव है? कभी-कभी मुश्किल हो जाती है, ऐसे? इतना बड़ा पद प्राप्त करना है, तो बाबा कहते हैं कि पेपर तो होंगे ही। अगर मैं माया को अपने पास बिठा दूँ तो विजयी का टाइटल किसको मिलेगा? बाबा को। तो बाबा ही पद पावे। पद हमको चाहिए तो विजयी भी हमको ही बनना है। विजयी बनने के लिये बाबा शक्तियाँ दे रहा है, मदद दे रहा है। भगवान को सर्वशक्तिवान कहा जाता है और हम उनके बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान है, तो शक्तियाँ क्यों देता है? समय पर अगर कोई भी विघ्न आता है तो शक्तियों के आधार पर आपको विघ्न, विघ्न नहीं लगेगा। तूफान नहीं लेकिन तोहफे का अनुभव होगा। तोहफा माना गिफ्ट। तो यह सब हमारी हिम्मत के ऊपर है। अगर हिम्मत है तो बाबा की मदद नहीं मिले, यह हो ही नहीं सकता। भगवान भी अगर वायदे से बदल जाये तो और ऐसा कौन है जो वायदा निभायेगा। इसलिये अपने को चेक करें कि हिम्मत रखते हैं? बाबा की शक्तियों को टाइम पर याद करके उसको यूज़ करते हैं? तो अगर हम शक्तियों को समय पर यूज़ करते हैं तो हम कभी भी हार नहीं खा सकते हैं, विजयी हैं। तो आप सबके मस्तक में विजय का तिलक है? अगर हमारी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी? तो हमको यह नशा होना चाहिए।

भगवान ने हमको पहचान करके अपना बनाया है, अगर यह निश्चय भी हो तो कभी दिलशिकस्त नहीं हो सकते। सिर्फ जो बाबा कहता है वो आप करते चलो, निश्चय रखो बाबा (भगवान) की नज़र मेरे ऊपर पड़ गई है, मेरा जरूर विशेष पार्ट है तभी भगवान की नज़र पड़ी, अगर यह निश्चय और नशा हो तो भी आप पार हो ही जायेंगे। इसलिए इस निश्चय से कभी हलचल में नहीं आओ। क्यों, क्या कहेंगे तो हलचल में आयेंगे। वाह वाह करो तो खुशी-खुशी से आगे बढ़ते रहेंगे। तो अपने में, बाबा में, ड्रामा में और परिवार में, इन चारों ही बातों में हमारा पक्का निश्चय चाहिए। परिवार में अगर कोई बात के कारण बार-बार फीलिंग में आ जाते, मूड खराब हो जाती तो यह फीलिंग फ्लू की बीमारी हो जायेगी। परिवार से दु:ख लो भी नहीं, तो दु:ख दो भी नहीं। अगर आधी बात छोड़ देते तो पुरुषार्थ तीव्र नहीं होता है। इसलिए अगर बाप समान बनना है तो जैसे बाबा ने न कभी दु:ख लिया, न दिया। दुआ दी, दुआ ली तब ब्रह्माबाबा नम्बरवन पहुँच गये, तो हमें भी फालो फादर करना है। ब्रह्माबाबा से प्यार है तो प्यार का रिटर्न है अपने को परिवर्तन करना, इसमें दूसरों को नहीं देखना है। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

“नव निर्माण करने वाले निर्मानचित्त बनो, कभी भी मूड ऑफ नहीं करो”

1) हम सभी प्यारे बाबा का हर मानव मात्र को शुभ सन्देश, शुभ पैगाम पहुंचाने वाले पैगम्बर अथवा संदेशी हैं। पैगम्बर कौन होता है? इस वैराइटी झाड़ में देखेंगे तो जो भी अपना-अपना धर्म स्थापन करके पैगम्बर बने हैं, वह आत्मायें अपने-अपने समय पर अपने प्यारे बाप के घर से डायरेक्ट आने के कारण सतोगुणी हैं फिर पीछे चक्र में आते हैं लेकिन हम पैगम्बर उन सबसे निराले हैं। वे बाप के घर से नई आत्मायें आती हैं और हमें बाप सम्मुख में नॉलेज देकर पावन बना रहे हैं। बाप ने हमें सिर्फ नॉलेज नहीं दी लेकिन अपना बनाकर अधिकारी बनाया है, वर्सा दिया है। उन पैगम्बरों को तो कहा आप अपना-अपना पिल्लर खड़ा करो और हमें पैगम्बर बनाया कि तुम्हें सारे विश्व का नव निर्माण करना है। पुराने को खत्म कर नया करना है। सारी विश्व की आत्माओं को मुझ बाप का पैगाम देना है।

2) बाबा ने हम बच्चों को इस बेहद झाड़ की जड़ में राजयोगी बनाकर बिठाया है – नव निर्माण के लिए। हमें याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। बाबा ने हमें सारे नव निर्माण की नींव पर रखा है। जब कोई मकान बनाते तो उसका पहला आधार नींव पर रहता है। जितना फाउन्डेशन पक्का होगा उतना इमारत का प्लैन रखेंगे। वह पैगम्बर कोई मकान के फाउन्डेशन नहीं, वह तो मरम्मत करने वाले हैं। लेकिन हमें तो नई दुनिया के नव निर्माण के लिए फाउन्डेशन में बाबा ने अन्दर रखा है। हमारा बाबा है फाउन्डर, उसने हमें फाउन्डेशन में रखा है और कहा इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मजबूत करो।

3) एक तरफ हम नींव हैं दूसरे तरफ हमें बाबा का पैगाम देना है कि बाप आया है – नव निर्माण करने। हमें बाबा ने सन्देशी बनाया है कि चारों तरफ मेरा सन्देश दो। एक तरफ हम राजयोगी, पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, हमारा योग ही सहयोग है। पवित्रता ही हमारा सहयोग है। यही हम बाप को नव निर्माण के लिए सहयोग देते हैं। हम नव निर्माण के आधार हैं। हमारे आधार पर ही सृष्टि का उद्धार होना है। दूसरा हम पैगम्बर हैं।

4) वह पैगम्बर आते हैं अपना धर्म स्थापन करने और हम कल्प के आदि में आये अभी फिर जा रहे हैं। अभी हम ऐसी नींव डाल रहे हैं जो 21 जन्म तक हमारा मकान सदा सजा सजाया रहे। तो हरेक ऐसी अपनी जवाबदारी समझते हो कि हम इस जड़ में बैठे हैं। अपनी कूट-कूट कर नींव पक्की कर रहे हैं? हमारा फाउन्डेशन है बुद्धियोग, नींव है याद की यात्रा। अगर हम नींव डालने वालों की बुद्धि भटकती है तो मकान का क्या होगा! अगर नींव डालने वाले, नींव डालते-डालते इधर-उधर चले जायें तो उस नींव का क्या होगा! हम सभी नींव में हैं, कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। हमें तो सर्विस की बहुत धुन है। लेकिन बुद्धि को बाहर भटकाते, तो वह नींव हिलेगी या मजबूत होगी? अगर नींव में बैठे-बैठे निकल जाते तो उसके लिए बाबा कहता - तुम्हें 100 गुणा दण्ड मिलेगा। अगर आज कोई कान्ट्रेक्टर लिखा पढ़ी करके कान्ट्रेक्ट ले और पीछे धोखा दे तो उस पर केस चल जाता। आप ने भी बाबा के लेज़र में नाम लिखाया, फार्म भरा अब कहो मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि फार्म भरा माना फंस गये। सोच कर फंसे ना! अच्छाई के लिए फंसे ना! बाप के प्यार में फंस गये। ठेका ले लिया ना! अब निकलेंगे भी तो कहाँ जायेंगे। हट्टी तो एक ही है। भागे तो भागे कहाँ। कोई रास्ता नहीं, लॉक लग गया है। जिसको लॉक लगा वही लकी है हम बाबा की लॉक के अन्दर हैं माना श्रीमत के अन्दर हैं, हमारा लॉक है श्रीमत।

5) बाबा ने हमें पैगम्बर बनाया है, परन्तु पैगम्बर कभी-कभी कहते मेरा माइन्ड डिस्टर्ब है। हूँ मैं निर्माण करने वाला लेकिन खुद का निर्माण करना मुझे नहीं आता। तो हम समझें कि हम दूसरों के लिए पंडित हैं। स्व से सृष्टि का निर्माण होगा या सृष्टि से स्व का? तो हरेक चेक करो कि मैं स्व का निर्माण कर रहा हूँ? क्या निर्माण करने वाला कभी बिगड़ेगा? अगर मैं बिगड़ गई तो क्या मैं बिगड़ी को बनाने वाली हुई या बनी हुई को बिगाड़ने वाली? उस टाइम मैं पैगम्बर कौन सा संदेश सबको देते? बिगड़ने का या निर्माण करने का? कईयों का मूड एकरस से निकल कर ऑफ हो जाता। उस समय हमारी सूरत से कौन सा पैगाम मिलता है? नव निर्माण का? कई कहते मेरे में देह-अभिमान बहुत है। पर बाबा तो जानता है ना कि हैं ही सब देह-अभिमानी। मैं इन गिरी हुई आत्माओं को ही देही-अभिमानी बनाने आया हूँ। फिर बाबा को क्यों कहते – मेरे में देह-अभिमान है! अगर सर्जन को कोई पेसेन्ट कहे हे सर्जन मेरी तो वही बीमारी है, तो यह भी उसकी इनडायरेक्ट इनसल्ट हुई ना। अगर कहते मेरे में वही का वही देह-अभिमान है, तो बाबा का मैने कितना रिस्पेक्ट किया! यही पढ़ाई की रिजल्ट सुनाई? बाबा ने पढ़ाया देही-अभिमानी बनो, हम जवाब देते हमारे में देह-अभिमान है। तो क्या यही प्यार का जवाब है? अगर अभी तक मेरे में वही देह-अभिमान है तो शूद्र कुमार और ब्रह्माकुमार में अन्तर ही क्या रहा? फिर कहेंगे आप जो भी समझों। तो मैं समझूँ तू राजयोगी नहीं हो ना!

6) बाबा ने हमें मंत्र दे दिया - जो देखते हो वह न देखो, जो न दिखाई देता है उसे याद करो। भिन्न-भिन्न संस्कार तो कर्मों का हिसाब-किताब है। मुझे कर्म का खाता चुक्तू करना है ना कि बनाना है। मैं सब हिसाब-किताब चुक्तू करने, कर्मातीत बनने के लिए बैठी हूँ फिर मैं अपना हिसाब-किताब संस्कारों के वश क्यों बनाऊं! अगर हम हर घड़ी यही समझें कि हम स्टेज पर हैं, अगर कोई स्टेज पर बैठ मूड आफ करे, रोता रहे तो वह सबको अच्छा लगेगा? उस समय मुझे सबसे प्यार मिलेगा? स्टेज पर बैठ कर रोओ तो सब देखें कि मैं बी.के. कितना दु:खी हूँ, मैं कितना उदास हूँ, जब गुस्सा आता है तो स्टेज पर जाकर गुस्सा करो, सब देखें मेरा चेहरा कैसा है। मैं सुन्दर हूँ या काला हूँ! हूँ तो मैं पैगम्बर लेकिन क्रोध वाला हूँ। रोने वाला हूँ। शायद यह गुस्सा भी मेरी सर्विस करे? फिर देखने वाले कहते - इनका यही प्रैक्टिकल का ज्ञान है! कहते हैं मेरी वृत्ति दृष्टि खराब होती है, मैं कहती तू खराब हो। बाबा हमें काले से गोरा बनाता फिर कहते दृष्टि खराब होती। खराब रावण है या राम? राम का होकर रहो। अगर सीता कहे मेरी तो वृत्ति खराब हो जाती तो राम पसन्द करेगा? राम के बच्चे होकर मेरी खराब वृत्ति जाती। लज्जा नहीं आती? फिर कहते क्या करें, संग ऐसा है तो जरूर रावण का संग है, बाप का तो नहीं है।

7) हम अन्धों को बाबा ने लाठी दी, तीसरा नेत्र दिया। अब हम पुराने नहीं, हमारा पुराना जन्म खत्म हुआ, जब हमारा नया जन्म, हम नयी स्थापना में हैं फिर क्यों कहते हमारा तो पुराना संस्कार है। हमेशा समझो हम नयी स्थापना करने वाले, नये अधिकारी हैं, नया राज्य लेने वाले हैं। जब न्यू बर्थ हो गया तो पुराना हिसाब-किताब समाप्त हुआ। ज्ञान कहता है सब बातों से प्रूफ हो जाओ। गुस्सा, उदासी, गन्दी वृत्ति सबसे प्रूफ। जब प्रूफ होंगे तो बाबा को प्रूफ दे सकेंगे। बाबा के सपूत बच्चे कहलायेंगे। अच्छा - ओम् शान्ति।